दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

(मॉडल टेस्ट-I)

DTVF/18(JS)–OPS-H9

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): mintu lal meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 09 11/9/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	4	2	2	5	8

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

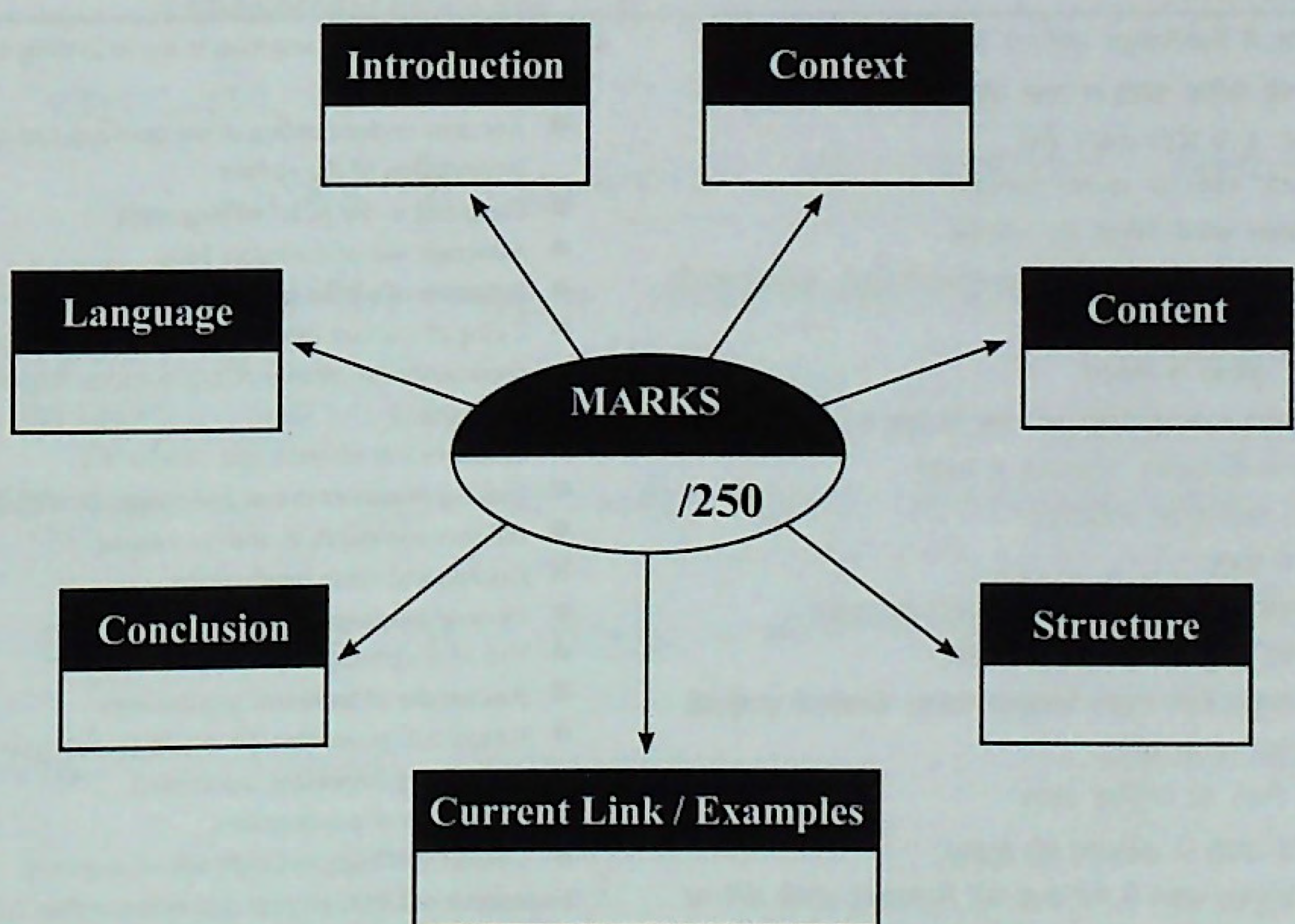

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड-क / SECTION-A

1. आपको दिये गए मानचित्र पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिये एवं अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर 30 शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक स्थान के लिये स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार नीचे दिये गए हैं। $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

Identify the following Places marked on the map supplied to you and write a short note of about 30 words on each of them in your Question- Cum-Answer Booklet. Locational hints for each of the Places marked on the map are given below seriatim. $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

(i) एक हड़प्पाकालीन स्थल

A Harappan Site

बालाकोट: यह वर्तमान में पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में लासबेला के निकट स्थित है। यहाँ से सनके कंगन का कारखाना प्राप्त हुआ है।

(ii) एक महाजनपदकालीन स्थल

A Mahajanapad Period Site

विराटनगर:
यह वर्तमान में राजस्थान के जयपुर जिले में स्थित है। यह छठी शताब्दी ई. पू. में मत्स्य महाजनपद की राजधानी था। इसे बैराठ के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ से अशोक का लघु शिलालेख भी प्राप्त हुआ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) एक हड़प्पाकालीन स्थल

A Harappan Site

राखीगढ़ी :

यह वर्तमान में हरियाणा में स्थित है। यहाँ से प्राक् हड़प्पा, हड़प्पाकालीन एवं परवर्ती हड़प्पाकालीन अवशेष प्राप्त हुए है। यहाँ से अनेक शिल्प आकृतियाँ जैसे - मानक ईंटे, घुटके, टेराकोटा, माप-तौल के उपकरण प्राप्त हुए है।

(iv) एक पत्तन

A Port

टिंडिस :

यह वर्तमान में केरला में स्थित है। यह मौर्योत्तरकाल में पश्चिमी भारत का महत्वपूर्ण बन्दरगाह था। यहाँ से पश्चिमी रोमन के व्यापार होता था।

Copyright – Drishti The Vision Foundati

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(v) एक चोलकालीन स्थल

A Chola Period Site

उत्तरमेरूर :

यह तमिलनाडु के काँची जिले में स्थित है। जहाँ से चोल शासक परान्तक के दो अभिलेख ९१९ ई. एवं ९२९ ई. के प्राप्त हुए हैं जिनसे चोलकालीन स्वायत्त स्थानीय शासन की जानकारी प्राप्त होती है।

(vi) एक बौद्धकला केन्द्र

A Buddhist Art Centre

बामियान:

यह अफगानिस्तान के बामियान प्रान्त की राजधानी है। जहाँ से एक पत्थर की विशाल बुद्ध प्रतिमा प्राप्त हुई है। इसके अलावा चैत्य, विहार एवं अन्य छोटी शैलियाँ प्राप्त हुई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(vii) एक महापाषाणिक स्थल

A Megalithic Site

जदिगेनहल्ली :

यह कर्नाटक में स्थित है। यहाँ से काले-लाल मृद्भाण्ड एवं लौह के औजार प्राप्त हुए हैं। यहाँ से कुछ शहरी वस्तुएँ भी प्राप्त हुई हैं जिनसे व्यापार-वाणिज्य की जानकारी मिलती है।

(viii) एक गुफास्थल

A Cave Site

• बराबर :

यह बिहार के गया जिले में स्थित है। यहाँ मौर्य शासक अशोक ने बराबर की पहाड़ियों में गुफाओं का निर्माण कर आजीवक सम्प्रदाय के अनुयायियों को दान किया था। बाद में अशोक के पौत्र दशरथ ने भी गुफाओं का निर्माण करवाया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ix) एक हड़प्पाकालीन स्थल

A Harappan Site

रंगपुर :

यह गुजरात में स्थित हड़प्पाकालीन स्थल है। यहाँ से चावल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

बेहतर जल निकास व्यवस्था एवं उन्नत नगरीकरण यहाँ दिखाई देता है।

(x) एक शिक्षा केन्द्र

An Education Centre

नालन्दा :

यह वर्तमान में बिहार के बिहारशरीफ जिले में स्थित है। गुप्त शासक कुमारगुप्त ने इसकी स्थापना की थी। यहाँ से चीन, तिब्बत, म्यांमार, श्रीलंका आदि देशों के विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। वर्तमान में इसकी पुन: स्थापना की जा रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xi) एक बौद्ध स्थल

A Buddhist Site

कन्हेरी :

यह महाराष्ट्र में स्थित है। यहाँ से अनेक बौद्ध गुफाएँ प्राप्त हुई हैं। ये गुफाएँ पश्चिमी भारत में चैत्य निर्माण की प्रारंभिक अवस्था को प्रदर्शित करती है। शक शासक रुद्रदामन के संगी रूपन का लेख भी यहाँ से प्राप्त हुआ है।

(xii) एक महाजनपदकालीन स्थल

A Mahajanapad Period Site

चम्पा :

इसकी पहचान वर्तमान बिहार के मुंगेर एवं भागलपुर जिलों से की जाती है। छठी शताब्दी ई.पू. में यह अंग महाजनपद की राजधानी थी।

बाद में मगध ने अंग के शासक को पराजित कर वहाँ अपना नियंत्रण स्थापित किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(xiii) एक गुफा स्थल

A Cave Site

एलोरा:

यह महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित है। यहाँ से बौद्ध, जैन एवं हिन्दू धर्म से सम्बन्धित गुफाएँ प्राप्त हुई हैं।

राष्ट्रकूट शासक कृष्ण I द्वारा निर्मित कैलाशमन्दिर भी यहाँ स्थित है। इसे UNESCO द्वारा विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया है।

(xiv) एक मंदिर कला केन्द्र

A Temple Art Centre

ऐहोल:

यह कर्नाटक के बागलकोट जिले में स्थित है। इसे मन्दिरों का नगर भी कहा जाता है। यहाँ से 70 मन्दिरों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

~~कीर्ति~~ रविकीर्ति द्वारा बनाया गया मेगुती मन्दिर भी यहाँ स्थित है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xv) एक ताम्रपाषाणिक स्थल

A Chalcolithic Site

अहार :

यह वर्तमान में राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित है। यहाँ से अनेक ताम्र उपकरण मिलने के कारण इसे ताम्रवती भी कहा जाता है। इसका कालक्रम 2100-1500 ई.पू. है।

(xvi) एक बौद्ध स्थल

A Buddhist Site

कार्ला :

यह महाराष्ट्र के पुणे जिले में लोनावाला के पास स्थित है। ~~यहाँ से~~ यहाँ से बौद्ध गुफाएँ प्राप्त हुई हैं। साथ ही सबसे प्राचीन चैत्य द्वितीय शताब्दी ई.पू. का यहीं से प्राप्त हुआ है। इसे शैलकृत गुफाओं के लिए जाना जाता जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xvii) एक प्रागैतिहासिक चित्रकला स्थल

A Prehistoric Painting Site

भीमबेटका:

यह वर्तमान मे मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में स्थित है। डो. वाकणकर ने इसकी खोज की थी। यह प्राचीन भारत में शैल चित्रों का खजाना है। अधिकांश चित्र पुरापाषाण एवं मध्यपाषाण काल के है।

→ UNESCO द्वारा विश्व विरासत सूची में।

(xviii) एक अशोककालीन शिलालेख स्थल

An Asokan Period Inscription Site

ब्रह्मगिरी:

यह वर्तमान में कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले में स्थित है। यहाँ से अशोक का लघु शिलालेख प्राप्त हुआ है। इससे अशोक के साम्राज्य की दक्षिणी सीमा की जानकारी प्राप्त होती है। यह एक नवपाषाणकालीन स्थल भी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xix) एक मंदिर स्थल

A Temple Site

खजुराहो :

वर्तमान में यह मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है। यहाँ चन्देल शासकों द्वारा 950- 1050 ई. के मध्य अनेक मन्दिरों का निर्माण करवाया गया। प्रमुख मन्दिरों में विश्वनाथ मंदिर, कंदारिया महादेव मन्दिर, चौंसठ योगिनी मन्दिर प्रमुख है।

(xx) एक नवपाषाणकालिक स्थल

A Neolithic Site

चेचर :

यह बिहार के सारन जिले में स्थित है। यहाँ से गेहूं, चावल एवं मोटे अनाज के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इससे कृषि कार्यों की जानकारी प्राप्त होती है।

यहाँ के लोग हड्डी के उपकरणों / औजारों का प्रयोग करते थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) विद्वानों ने हड़प्पा सभ्यता के पतन के संदर्भ में आकस्मिक सिद्धांतों के साथ-साथ दीर्घकालिक सिद्धांत के रूप में पारिस्थितिकीय असंतुलन जैसे भौतिकतावादी कारणों को सिद्ध करने का प्रयास किया है। सभ्यता के ह्रास में प्राकृतिक व मानवीय कारणों की भूमिका के आलोक में उक्त कथन को विश्लेषित कीजिये। 20

Scholars have tried to prove materialistic factors like ecological imbalance as long terms reasons, along with the short-term reasons responsible for the decline of Harappa Civilization. In the context of the above statement analyse the role of natural and human factors in the decline of the civilization. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हड़प्पा सभ्यता एक नगरीकृत एवं कांस्य युगीन सभ्यता थी। इस सभ्यता के पतन के सन्दर्भ में इतिहासकारों में मतभेद है। विभिन्न इतिहासकारों द्वारा अलग-2 मत प्रस्तुत किये जिनमें आकस्मिक पतन का सिद्धांत एवं पारिस्थितिकी असंतुलन का सिद्धांत प्रमुख है।

आकस्मिक पतन का सिद्धान्त

मार्टिमर व्हीलर एवं गार्डन चाइल्ड जैसे यूरोपीय विद्वानों ने हड़प्पा सभ्यता के पतन के लिए आर्य आक्रमण को उत्तरदायी ठहराया है। व्हीलर के अनुसार "परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर इन्द्र दोषी ठहरता है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन्होंने अपने पक्ष में साहित्यिक एवं पुरातात्विक प्रमाण भी दिये। इन विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद में इन्द्र को पुरन्दर अर्थात् किलों को नष्ट करने वाला कहा गया है और इन किलों की पहचान हड़प्पा बस्तियों के रूप में की गई।

इसी तरह मोहनजोदड़ो से 42 नरकंकाल के साक्ष्य मिले है जो आकस्मिक नरसंहार को प्रदर्शित करते है।

परन्तु वास्तव में आर्य आक्रमण के सिद्धांत को पतन के लिए उत्तरदायी नहीं माना जा सकता है क्योंकि भारत में आर्यों का आक्रमण 1500 B.C. के पश्चात् हुआ जबकि हड़प्पा सभ्यता का पतन 1750 B.C. के पश्चात शुरू हो जाता है। इस तरह पुरातात्विक स्रोत आर्य आक्रमण की पुष्टि नहीं करते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वास्तव में सभ्यता के पतन का कारण पारिस्थितिकीय असंतुलन था। प्रस्तुत हड़प्पा सभ्यता के नगरीय चरण में जनसंख्या में व्यापक वृद्धि हुई और संसाधनों की प्राप्ति हेतु जनसंख्या का विस्थापन हुआ और नगरीय सभ्यता पुनः ग्रामीण क्षेत्रों में ढल गई। इस सिद्धांत का के प्रतिपादक फेयरसर्विस है।

इसी के साथ सभ्यता के पतन में प्राकृतिक कारणों जैसे बाढ़, नदी जल मार्ग में परिवर्तन, अग्निकाण्ड, विदेशिक हमलों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इन सबके कारण कृषि आधारित एवं उद्योग-धन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने से व्यापार-वाणिज्य बाधित हुआ जो कि सभ्यता के आधारभूत तत्त्व थे।

अतः इन आधारभूत तत्त्वों में असंतुलन होने से हड़प्पा सभ्यता का पतन हुआ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) ताम्रपाषाणिक संस्कृति के अंतर्गत प्राप्त विभिन्न संस्कृतियों को मृदभाण्डों की विशिष्ट किस्मों के आधार पर विश्लेषित करते हुए तत्कालीन कलात्मक अभिरूचियों को स्पष्ट कीजिये। 15

Elucidate the artistic aptitudes of Chalcolithic culture on the basis of discovery of specific varieties of potteries of the period. 15

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भारत में नवपाषाण काल के अन्तिम चरण में तांबे का प्रयोग प्रारंभ हो चुका था। अतः मध्य भारतीय उपमहाद्वीप में तांबे एवं पत्थर उपकरणों का साथ-साथ उपयोग होने के कारण इस काल को ताम्रपाषाण काल कहा जाता है।

भारत में ताम्रपाषाणकाल बस्तियों एवं ~~संस्कृतियों~~ का विस्तार निम्न प्रकार था।

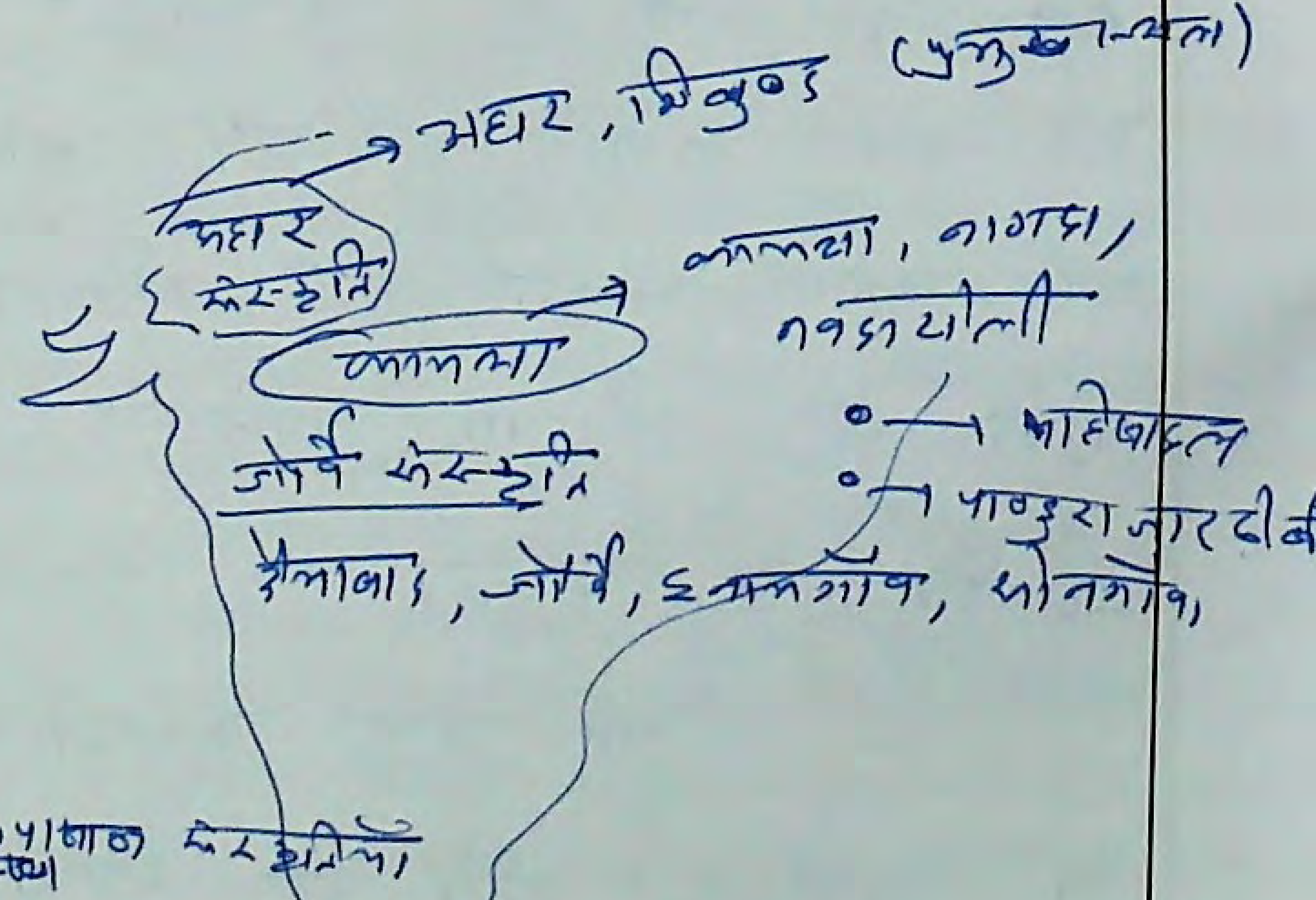

चित्र: ताम्रपाषाण संस्कृतियों के प्रमुख स्थल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सामाजिक जीवन:

ताम्रपाषाणकालीन लोग मिट्टी के घरों में रहते है। यद्यपि पीलुएड से ईंटो के बने घर भी प्राप्त हुए हैं।

कृषि एवं पशुपालन जीविका का मुख्य स्रोत था। कृषि के अन्तर्गत गेहूं, चावल, जौ, चना एवं बाजरा जैसी फसलों की कृषि की जाती थी तथा भेड़, बकरी, भैंस, गाय जैसे पशुओं को पाला जाता था।

पशुओं सामग्री का उपयोग के साथ लिखित के जगह पे उत्पादन में किया जाता था। साथ ही कृषि कार्यों एवं परिवहन के कार्यों में पशुओं का उपयोग किया जाता था।

ताम्रपाषाणकालीन लोग पारलौकिक जीवन में विश्वास रखते थे क्योंकि अनेक कलाकृतियों के रूप से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मनुष्य के अस्थिपंजरों के साथ-साथ दैनिक उपयोग की वस्तुएँ प्राप्त हुई है।

ताम्रपाषाणकालीन लोग कला के भी शौकीन थे। दैमाबाद में अनेक ताम्र मूर्तियों के शिल्पकला के निर्माण की जानकारी प्राप्त होती है।

इसी तरह विभिन्न मृद्भाण्डों पर चित्रों से भी ताम्रपाषाणकाल की जानकारी प्राप्त होती है। मालवा संस्कृति के मृद्भाण्ड मालवे उत्कृष्ट मृद्भाण्ड है। इसी तरह जोर्वे संस्कृति के काले-लाल मृद्भाण्ड भी महत्वपूर्ण है जहाँ लाल रंग के मृद्भाण्डों पर काले रंग से चित्रकारी की गई।

इस तरह कहा जा सकता है कि मृद्भाण्ड ताम्रपाषाण संस्कृति के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है और इनसे इस काल की कला के बारे में जानकारी प्राप्त होती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) 'प्रारम्भिक तथा उत्तरवैदिक काल के बीच की अवधि में धार्मिक मतों में एक महान परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है, जिसकी परिणती उपनिषदों के दर्शन में देखी जा सकती है।' विवेचना कीजिये। 15

'A great shift in religious views is visible in the period between the Early and Later Vedic ages that is evident in the philosophy of the Upanishads.' Explain. 15

प्रारम्भिक आर्यों के धार्मिक विश्वासों की जानकारी ऋग्वेद से प्राप्त होती है।

ऋग्वैदिक कालीन धर्म प्रकृतिपरक एवं बहुदेववादी था। उनकी उपासना का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति करना नहीं बल्कि भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति करना था।

ऋग्वैदिक काल में देवी-देवताओं की उपासना प्रार्थना एवं यज्ञ के माध्यम से होती थी। प्रार्थना का प्रचलन अधिक था जो सामूहिक या व्यक्तिगत होती है। यज्ञ में कर्मकाण्ड एवं आडम्बरों का अभाव था अर्थात ऋग्वैदिक धर्म का स्वरूप सरल था।

ऋग्वैदिक प्रमुख देवताओं में इन्द्र, अग्नि एवं वरुण थे तथा पूषण पशुओं का देवता था।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तरवैदिक काल में धार्मिक विश्वासों में परिवर्तन आया। अब देवताओं की उपासना के लिए धार्मिक कर्मकाण्ड एवं आडम्बरों जैसे- बलि पर बल दिया जाने लगा एवं उपासना में ब्राह्मणों की भूमिका अनिवार्य हो गई। फलतः पुरोहित का प्रभुत्व बढ़ा।

यद्यपि इस काल में भी उपासना का उद्देश्य भौतिक सुख-सुविधा प्राप्त करना, प्रकृतिपूजक एवं बहुदेववादी जैसे तत्व निरन्तरता में बने रहे।

ऋग्वैदिक एवं उत्तरवैदिककाल के धार्मिक विचारों का चरम रूप उपनिषदों में दिखाई देता है। वैदिक कालीन एवं उपनिषदों के धार्मिक विचारों में अब अन्तर परिलक्षित हो गया, जो आलोचित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वैदिककालीन कर्म [कांडवादी] थे जबकि उपनिषदों में ज्ञानवाद पर बल दिया गया। यहाँ उपनिषदों में कहा गया कि ब्रह्म एवं आत्मा तत्वतः एवं स्वतः एक ही है।

वैदिककाल में उपासना का उद्देश्य भौतिक सुख प्राप्त करना था जबकि उपनिषदों में भौतिकवाद की बजाय आध्यात्मिक विकास पर बल दिया गया।

वैदिककाल की तुलना में उपनिषदों में मोक्ष एवं सन्यास आश्रम को अत्यधिक महत्व दिया गया।

साथ ही उपनिषदों में ब्राह्मण धर्म के धार्मिक कर्मकांड एवं आडम्बरों की आलोचना की गई है और कहा गया कि "यज्ञ फूटी हुई नाव के समान है जिसके भवसागर पार नहीं किया जा सकता है।" अतः उपनिषदों में कर्मकांड की बजाय ज्ञान पर बल दिया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

3. (a) छठी शताब्दी ईसा पूर्व में विकसित द्वितीय नगरीकरण तथा समृद्ध अर्थव्यवस्था ने एक-दूसरे को पूरकता प्रदान करने का कार्य किया। विश्लेषण कीजिये। 20

Second urbanization and prosperous economy developed in the 6th century BC worked to complement each other. Analyze. 20

600 B.C. में अर्थव्यवस्था में आए परिवर्तनों ने द्वितीय नगरीकरण का ~~मैदान~~ आधार तैयार कर दिया।

वस्तुतः 600 B.C. में कृषि में लोहे का व्यापक प्रयोग किया जाने लगा। जिससे वनों की आसानी से सफाई होने से कृषि योग्य भूमि का विस्तार हुआ और लोहे के हल के व्यापक प्रयोग से गहरी जुताई होने से उत्पादन में व्यापक वृद्धि हुई। काठक संहिता में 24 बैलों द्वारा जुताई का प्रमाण मिलता है।

इस अधिशेष कृषि के कारण गैर-कृषि कार्यों अर्थात् उद्योग-धंधों को बढ़ावा मिला जो कि श्रम के विभाजन एवं विशेषीकरण से युक्त था।

इस काल में अनेक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

नये व्यावसायिक वर्गों जैसे - नाई, धोबी, जुलाहा अस्तित्व में आये और जहाँ इनकी बस्तियां थी वो नगरों में परिवर्तित हो गई।

विभिन्न शिल्पों के विकास के कारण उत्पादन एवं वितरण की समस्या को दूर करने हेतु श्रेणियों का निर्माण हुआ। इन श्रेणियों द्वारा व्यापार - वाणिज्य के कारण नगरों का उत्थान हुआ।

इसी तरह उत्तरवैदिक काल में (600 B.C.) मौद्रिक अर्थव्यवस्था का प्रचलन हुआ। इस समय आहत सिक्कों का प्रचलन प्रारम्भ हो चुका था जो तांबे एवं चांदी के बने होते थे। सिक्कों के कारण मौद्रिक अर्थव्यवस्था, व्यापार - वाणिज्य एवं नगरीकरण को बढ़ावा मिला।

600 B.C. के दौरान आर्थिक परिवर्तनों के कारणों के बदलाव की आर्थिक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसलिए मजबूत हुई और यह वर्ग गाँवों की बजाय शहरी केन्द्रों में रहने लगा। फलत: इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के क्रम में नगरीकरण को बढ़ावा मिला।

600 B.C. में नगरीकरण के आर्थिक परिवर्तनों के साथ राजनीतिक एवं धार्मिक कारण भी थे।

वस्तुत: 600 B.C. में महाजनपदों का उदय हुआ और इनकी सत्ता के केन्द्र तक्षशिला, मगध, काशी, उज्जैन इत्यादि राजधानी केन्द्रों, शिक्षा केन्द्र, उत्पादन एवं व्यापार के केन्द्र के रूप में अस्तित्व में आये और नगरों में परिवर्तित हुए।

इसी तरह 600 B.C. में उदित हुए नये धार्मिक सम्प्रदायों जैन एवं बौद्ध ने भी नगरों को अपना प्रचार केन्द्र बनाया और नगरीय जीवन का समर्थन किया। फलत: नगरीकरण को बढ़ावा मिला। इस तरह द्वितीय नगरीकरण एक जटिल प्रक्रिया का परिणाम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) 'मौर्य साम्राज्य के सुदृढ़ता व स्थायित्व ने मौर्यकालीन व्यापार प्रणाली को विकसित स्वरूप प्रदान किया जिसे शहरी अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत देखा जा सकता है।' विवेचना कीजिये। 15

'The strength and stability of the Mauryan Empire provided a developed character to the Mauryan trade system which can be seen in the urban economy.' Discuss. 15

मौर्य शासकों ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना और केन्द्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था के माध्यम से राजनीतिक एकता स्थापित की। एक सुदृढ़ केन्द्रीय सत्ता के कारण कानून-व्यवस्था की स्थिति बेहतर हुई जिसने व्यापार करना आसान कर दिया।

इसके अतिरिक्त मौर्य शासकों द्वारा उत्तरापथ के विशाल व्यापारिक मार्ग का निर्माण करवाया। चूंकि, परिवहन एवं संचार व्यापार की बुनियाद होते हैं। अतः इससे व्यापार-वाणिज्य को बढ़ावा मिला।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

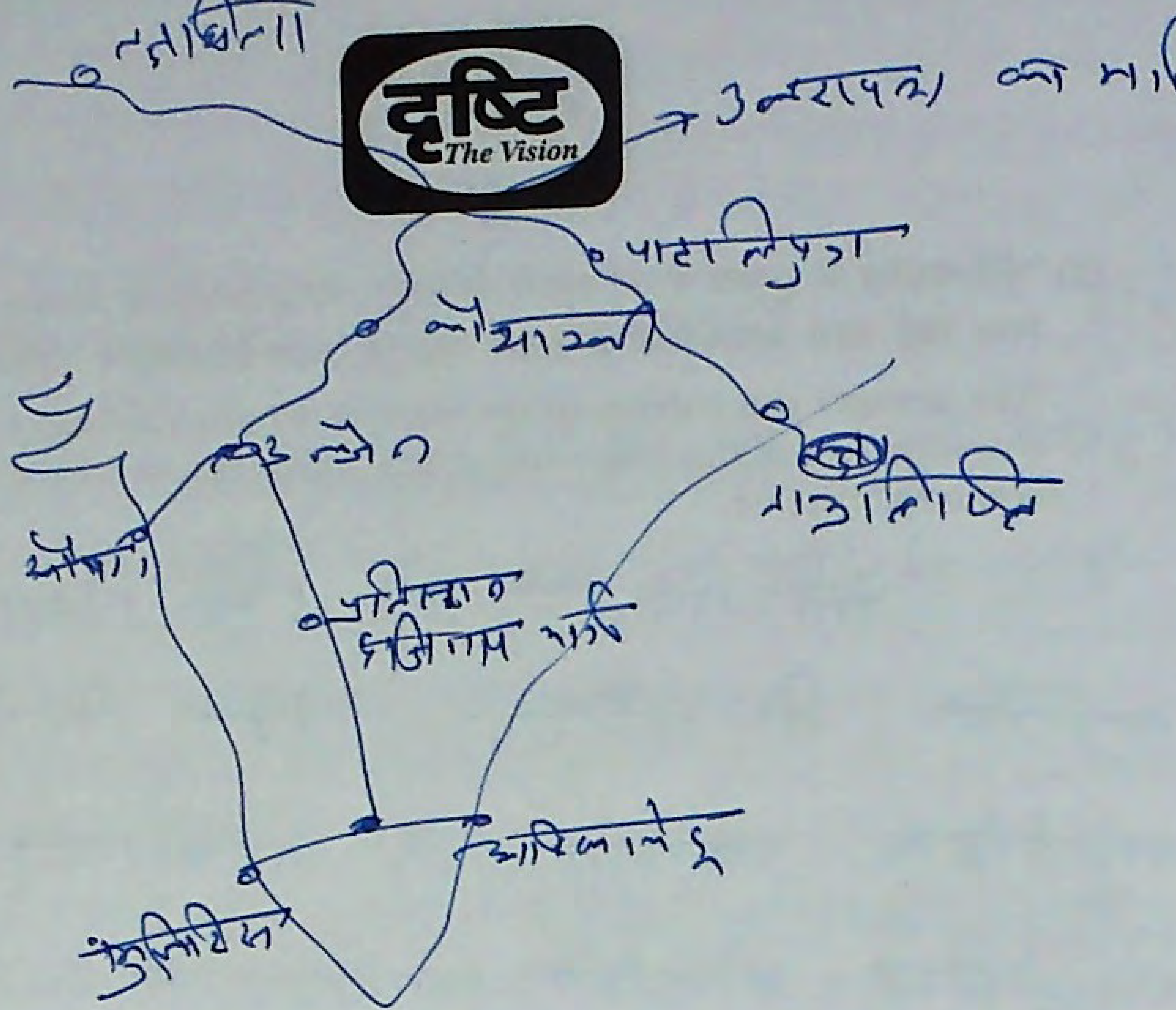

चित्र: मौर्यकालीन उत्तरापथ एवं दक्षिणापथ व्यापारिक मार्ग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) 'अशोक की धम्म नीति मानवीय मूल्यों का अद्भूत दस्तावेज़ है।' विश्लेषण कीजिये। 15

'Ashoka's Dhamma policy is a outstanding document of human values.' Analyze. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अशोक के धम्म को लेकर विभिन्न इतिहासकारों में मतभेद है। किसी ने इसे अशोक का मनमाना राजशाही सिद्धांत कहा है तो किसी ने बौद्ध धर्म का प्रतिरूप। वास्तव में इसे अशोक के धम्म के मूल तत्वों को जानने हेतु उसके अभिलेखों का अध्ययन आवश्यक है।

धम्म के मूल तत्व:

अशोक ने अपने दूसरे स्तम्भ लेख में कहा कि "किं चु धम्मे।" (धम्म क्या है)

"अपासिनवे बहुकयाने दया दाने, सचे, सोचये मादवे साधवे च।"

अर्थात् बहुत से कल्याणकारी कार्य करना, पाप न करना, दया, दान, सत्य, शुचिता, मृदुता एवं साधुता धम्म के लक्षण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी तरह 2 वें एवं 12 शिलालेख में विभिन्न धर्मों के प्रति सहिष्णुता ~~का~~ भाव रखने एवं सभी जीवों के प्रति दया भाव रखने का वर्णन मिलता है।

वास्तव में अशोक के धम्म के दो स्वरूप दिखाई देते हैं।

विधेयात्मक स्वरूप, इसके अन्तर्गत सत्य, अहिंसा, शांति, सहिष्णुता, प्रेम, दया, बड़ों का आदर एवं सम्मान करना जैसे गुणों एवं ~~सभी~~ मानवीय मूल्यों पर बल दिया गया है।

निषेधात्मक स्वरूप: इसके अन्तर्गत क्रोध, निष्ठुरता, ईर्ष्या, घमण्ड जैसे दुर्गुणों को ~~त्यागने~~ त्यागने पर बल दिया गया है। तीसरे स्तम्भ लेख में इन दुर्गुणों को आसिनव (पाप) कहा गया है और कोई भी व्यक्ति इन दुर्गुणों को त्यागकर ही

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

धर्म का पालन कर सकता है।

इस तरह निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महाभारत एक सामाजिक आचार संहिता था जिसमें विभिन्न मानवीय गुणों को ग्रहण करने एवं दुर्गुणों को त्याग करने पर बल दिया गया है। इस दृष्टि से यह मानवीय मूल्यों का अद्भुत दस्तावेज है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) मौर्योत्तरकालीन वास्तुकला तथा मूर्तिकला के विकास ने धर्मनिरपेक्ष स्वरूप का अद्‌भूत उदाहरण प्रस्तुत किया है। समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये। 15

The development of the Post-Mauryan architecture and sculpture presents an outstanding example of secularism. Critically examine. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खण्ड-ख / SECTION-B

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये: 10 × 5 = 50
Answer the following questions in about 150 words each:

(a) सल्तनतकालीन कारखाना व्यवस्था पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।
Comment briefly on the industrial system of Sultanate Period.

सल्तनतकाल में राजकीय आवश्यकताओं एवं शाही दरबार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कारखानों की स्थापना की गई थी। ये कारखाने राजकीय निर्माणशालाएँ होती थी।

फिरोजशाह तुगलक के समय 36 कारखानों का उल्लेख मिलता है। यह कारखाने दो प्रकार के होते थे। रातिबि एवं गैर रातिबी।

रातिबि कारखानों में कार्य करने वालों को निश्चित एवं नियमित वेतन प्राप्त होता था तथा गैर-रातिब कारखानों में कार्यरत लोगों का वेतन अनिश्चित एवं अनियमित था। कारखानों का प्रबन्धन करने वाले अधिकारी को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कारखाना कहा जाता है।

स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद शेष उत्पादन को बाजार में बेचा जाता था। फलत: राज्य की आय में वृद्धि हुई। इस तरह सल्तनत काल में कारखाना व्यवस्था की उत्पादन की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका थी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) सल्तनतकालीन मुद्राप्रणाली के विश्लेषण के माध्यम से सल्तनत के विकास व पतन को स्पष्ट कीजिये।

Explain the development and decline of the Sultanate through the analysis of Sultanate currency system.

सर्वप्रथम सल्तनतकाल में इल्तुतमिश ने मुद्रा प्रणाली को प्रारम्भ किया। उसने चाँदी का जीतल एवं ताँबे का टंका नामक सिक्के प्रारम्भ किये। यह सल्तनत का प्रारम्भिक समय था।

इससे मौद्रिक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला और सल्तनत का आर्थिक सुदृढ़ीकरण हुआ।

आगे चलकर मुहम्मद बिन तुगलक ने सोने का दीनार तथा फिरोजशाह तुगलक ने शशगानी, अद्धा एवं बिख जैसे सिक्कों चलवाये।

शशगानी, जीतल का छः गुना एवं अद्धा (जीतल $\times \frac{1}{2}$), बिख (जीतल $\times \frac{1}{4}$) होता था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस मौद्रिक अर्थव्यवस्था ने व्यापार-वाणिज्य एवं नगरीकरण को बढ़ावा दिया। इस काल फिरोजपुर, हिसार, जौनपुर जैसे नगर अस्तित्व में आये।

वहीं इसके ~~पर~~ परवर्ती काल के सिक्के कम मिलते है। इससे सल्तनत की गिरती हुई आर्थिक स्थिति एवं व्यापार-वाणिज्य के पतन की जानकारी प्राप्त होती है। अतः अर्थव्यवस्था दुर्बल होने से सल्तनत का पतन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) बरनी की रचनाओं के आधार पर सल्तनतकालीन राजनीति एवं प्रशासनिक स्वरूप की चर्चा कीजिये।

Discuss the Political and administrative structure of Sultanate period on the basis of Jiauddin Barani's works.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जियाउद्दीन बरनी सल्तनतकालीन प्रमुख इतिहासकार है। उसने फतवा-ए-जहांदारी तथा तारीख-ए-फिरोजशाही नामक ग्रंथ लिखे जो सल्तनतकालीन इतिहास को जानने के मुख्य स्रोत है।

बरनी के अनुसार शासक को शरीयत के अनुसार शासन करना चाहिए तथा गैर-मुस्लिमों को दण्ड देना चाहिए। उसने मुहम्मद बिन तुगलक की आलोचना की है क्योंकि वह हिन्दुओं के त्योहारों में शामिल होता था।

उसके अनुसार फिरोजशाह तुगलक अब तक के सुल्तानों में सर्वश्रेष्ठ एवं आदर्श सुल्तान था

Copyright – Drishti The Vision Foundation

क्योंकि उसने शरीयत के अनुसार शासन किया था।

बरनी के अनुसार शासन का स्रोत शक्ति है। शक्ति सेना से आती है। इस सन्दर्भ में अलाउद्दीन खिलजी को आदर्श शासक बताया है।

इन सबके बावजूद बरनी के दृष्टिकोण में कट्टरता दिखाई देती है क्योंकि मुस्लिम सिद्धि का समर्थक था। इसी कारण उसने लिखा कि "सांकेतिक मुद्रा के प्रचलन के कारण सभी हिन्दुओं के घर टकसाल बन गये हैं।" यह उसकी सोच को दर्शाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(d) 'विजयनगर साम्राज्य की सामाजिक संरचना भारतीय समाज की आम संरचना से भिन्न थी।' विश्लेषण कीजिये।

'The social structure of the Vijayanagar empire was different from the general structure of North Indian society.' Analyze.

विजयनगर की सामाजिक संरचना में उत्तर एवं दक्षिण भारतीय समाज के तत्वों को मिश्रित रूप से देखा जा सकता है।

विजयनगर समाज में ब्राह्मणों की स्थिति सर्वोच्च थी। धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त ब्राह्मणों की धर्मनिरपेक्ष भूमिका भी दिखाई देता है। उन्हें सेना के उच्च पदों एवं सेनापतियों के रूप में नियुक्त किया जाता था।

समाज में क्षत्रिय वर्ग की स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती है लेकिन वहाँ वैश्य वर्ग था जो व्यापार-वाणिज्य में शामिल था।

अनेक उत्तर भारतीय व्यापारी विजयनगर साम्राज्य में बसते जाने को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

जिन्हें बड़वा कहा जाता था। इन दोनों के मध्य व्यापार हेतु प्रतिस्पर्धा होती थी।

विजयनगर साम्राज्य में मिलते समूह दो वर्गों में विभाजित थे। इलोगई एवं बलोंगई।

विजयनगर में समाज का कठोर वर्गीकरण दिखाई देता है जहाँ जातीय लोगों के आधार व्यवसायों का विभाजन था।

महिलाओं की दशा बेहतर नहीं थी। उन्हें भोग्या समझा जाता था। बाल विवाह का प्रचलन था। दास प्रथा थी। पर्दा प्रथा नहीं थी। दासों के क्रय-विक्रय को बेसवागा कहा जाता था।

इस तरह विजयनगर की सामाजिक संरचना में काल आधारित समाज के समानता एवं असमानता देखी जा सकती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(e) 17वीं शताब्दी के दौरान मनसबदारी व्यवस्था में हुए परिवर्तनों तथा उसके प्रभावों की संक्षिप्त चर्चा कीजिये।

Briefly discuss the changes of the Mansabdari system and its effects in the 17th century.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मनसब शब्द का अर्थ 'पद' होता है। मनसबदारी व्यवस्था मुगलों की प्रशासनिक व्यवस्था थी जिसे अकबर ने प्रारम्भ किया था। यह मंगोलों की सैन्य प्रणाली से प्रेरित थी।

परिवर्तन:

जहाँगीर ने मनसबदारी व्यवस्था में दो अस्पा-सिह अस्पा प्रणाली प्रारंभ की। इसके अन्तर्गत मनसबदारों का जात पद बढ़ाये बिना सवार पद को बढ़ा दिया गया। फलतः राज्य की सैन्य आवश्यकताएँ पूरी हुईं।

शाहजहाँ द्वारा मनसबदारी व्यवस्था में 'महाना' व्यवस्था लागू की गई और मनसबदारों को मासिक वेतन दिया जाने लगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रभाव :

सकारात्मक :

- मुगल साम्राज्य को स्थायित्व एवं वफादारी ~~का~~ ~~की~~ से युक्त नौकरशाही प्राप्त हुई। फलत: साम्राज्य का प्रशासनिक केंद्रीकरण हुआ।
- नगरीकरण को बढ़ावा।
- सामासिक संस्कृति का विकास।

~~नकारात्मक~~ नकारात्मक :

मनसबदारी व्यवस्था कुव्यवहार की प्रवृत्ति से युक्त थी तथा मनसबदार किसानों का शोषण करते थे। परवर्ती काल में यह व्यवस्था सामन्तवाद के समान हो गई और इसने मुगल ~~साम~~ साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (a) 'भारत में तुर्कों की विजय ने बहुकेन्द्रित राजनीति को केन्द्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था में बदलने का अभूतपूर्व कार्य किया।' स्पष्टीकरण कीजिये। 20

'Turks victory in India had performed unprecedented task of transforming multi-centered politics into a centralized political system.' Elucidate. 20

तुर्कों के आक्रमण एवं साम्राज्य की स्थापना के समय भारत में अनेक छोटे-छोटे राज्य थे। किसी भी सार्वभौमिक राजनीतिक सत्ता का अभाव था।

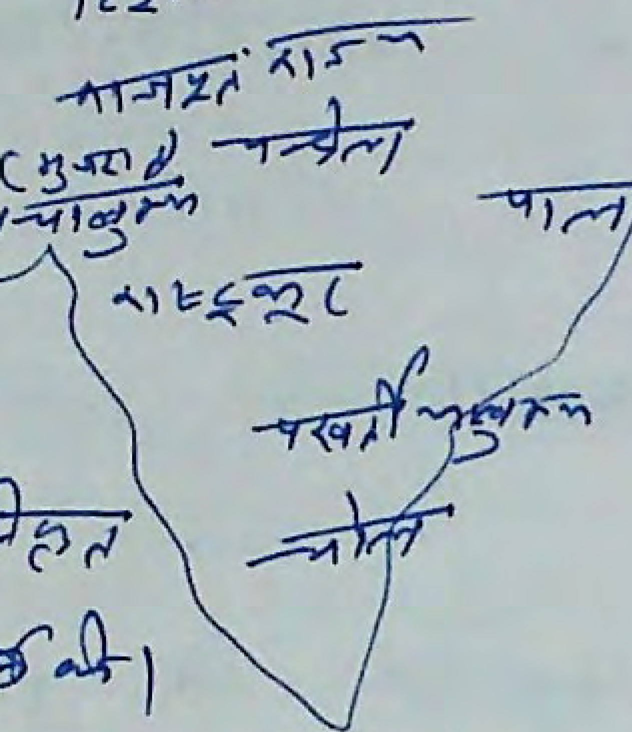

तुर्कों ने विभिन्न राजपूत राज्यों को पराजित किया और एक केन्द्रीकृत राज्यव्यवस्था की स्थापना की।

तुर्कों की राज्यव्यवस्था के प्रमुख अभिलक्षण निम्न प्रकार है-

A) केन्द्रीय शासन

सुल्तान शासन का सर्वोच्च होता था। उसे सभी प्रकार की राजनीतिक, प्रशासनिक, सैनिक एवं न्यायिक शक्तियाँ प्राप्त थी। वह राजपद के महत्व को बढ़ाने हेतु ईरानी परम्पराओं को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अपनाता था।

सुल्तान की सफलता हेतु विभिन्न विभाग होते थे जिनमें अधिकारियों की नियुक्ति सुल्तान द्वारा की जाती थी। सुल्तान इनकी सलाह मानने के लिए बाध्य नहीं था। सल्तनत काल में चार विभाग प्रमुख थे।

दीवान-ए-विजारत : यह वित्त विभाग था। इसका प्रमुख वजीर प्रधानमंत्री के समान होता था। इसका प्रमुख कार्य आय-व्यय का ब्यौरा रखना, वेतन वितरण इत्यादि था।

दीवान-ए-अर्ज : यह सैन्य विभाग था। इसकी स्थापना बलबन ने की थी। इसका प्रमुख आरिज-ए-मुमालिक कहलाता था। इसका मुख्य कार्य सैनिकों की भर्ती, प्रशिक्षण एवं अनुशासन बनाए रखना था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दीवान-ए-इंशा: यह पत्राचार विभाग होता था। यह सुल्तान एवं प्रांतीय शासकों और विदेशी राज्यों के मध्य पत्राचार का कार्य करता था।

दीवान-ए-रसालत: यह धार्मिक विभाग था। इसका प्रमुख सद्र-उस-सुदूर कहा जाता है। कुछ विद्वान इसे विदेश विभाग भी मानते थे।

राजस्व प्रशासन: सल्तनतकाल में जजिया, खराज, खुम्स एवं खिराज राजस्व के प्रमुख स्रोत थे। इसके अतिरिक्त अलाउद्दीन खिलजी ने घरी कर एवं चरी कर भी आरोपित किये। वहीं फिरोजतुगलक ने नहर के सिंचाई पर हक-ए-शर्ब नामक कर लगाया।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सुल्तानों/तुर्कों ने बहुकेन्द्रीत राजनीतिक व्यवस्था को समाप्त कर शक्तिशाली केन्द्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) 'निरंकुश राजतंत्र की नींव रखने तथा प्रशासनिक तंत्र की प्राथमिक रूपरेखा प्रदान करने के कारण सल्तनत काल इल्तुमिश का ऋणी रहेगा।' मूल्यांकन कीजिये। 15

'The Sultanate period is indebted to Iltutmish for laying the foundation of autocratic monarchy and providing the primary framework of the administrative system.' Evaluate. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शासक बनने के समय इल्तुतमिश के समक्ष अनेक चुनौतियाँ थी जैसे-

- यल्दोज एवं कुबाचा की चुनौती।
- सल्तनत को मंगोल आक्रमण से बचाना।
- अमीरों का एक वर्ग कुत्बी उसका विरोधी था।
- बंगाल एवं राजपूत राज्यों में विद्रोह
- बेहतर प्रशासनिक व्यवस्था का अभाव।

इल्तुतमिश ने इन चुनौतियों से निपटने हेतु निम्न काम उठाये-

- यल्दोज एवं कुबाचा को युद्ध में पराजित किया और सल्तनत की स्वतंत्र स्थापना की तथा दिल्ली को राजधानी बनाया।
- ख्वारिज्म के शासक जलालुद्दीन मंगबरनी को शरण देने इनकार सल्तनत को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चंगेज खाँ के मंगोल आक्रमण से बचाया।

- प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण हेतु तुर्क-ए-चहलगानी की स्थापना की और इस चहलगानी के सदस्यों को उच्च प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया।
- आर्थिक सुदृढ़ीकरण इक्ता व्यवस्था को संगठित रूप प्रदान किया तथा अधिशेष राजस्व की राजकोष तक पहुँच सुनिश्चित की।
- सल्तनत को वैधानिक मान्यता दिलाने के लिए बगदाद के खलीफा अल-मुस्तनसिर बिल्लाह से खिलअत प्राप्त की।
- राजतंत्र को मजबूत बनाने के लिए ईरानी राजतंत्र के अनुरूप मजबूत सैन्य तंत्र का निर्माण किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- नगर व्यवस्था को बेहतर बनाने हेतु काजी एवं अमीर-ए-दाद जैसे अधिकारियों की नियुक्ति की।
- चाँदी का जीतल एवं ताँबे का टका नामक सिक्के चलवाये। फलतः मौद्रिक अर्थव्यवस्था एवं व्यापार-वाणिज्य को बढ़ावा मिला और सल्तनत मजबूत हुई।

इस तरह निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है इल्तुतमिश ने दिल्ली सल्तनत का राजनीतिक सुदृढ़ीकरण किया और आर्थिक-प्रशासनिक सुधार किये।

इसी आधार बलबन ने सल्तनत का सुदृढ़ीकरण किया तो वहीं अलाउद्दीन खिलजी सल्तनत का विस्तार किया। इसी कारण इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है। उसका उसका प्राथमिकता इन्हीं कारणों से इन्हें में ~~सल्तनत~~

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) सल्तनकालीन राजस्व प्रशासन के अंतर्गत मध्यस्थों की विद्यमानता का उल्लेख करते हुए सुल्तानों द्वारा मध्यस्थों के संदर्भ में अपनाई गई नीतियों का विश्लेषण कीजिये। 15

Describe the role of intermediaries in the revenue administration of the Sultanate period and analyse the policy adopted by the Sultans towards them. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजस्व प्रशासन:

सल्तनतकालीन राजस्व प्रशासन के अन्तर्गत जजिया, जकात, खिराज एवं खुम्स प्रमुख कर थे। राज्य की आय का मुख्य स्रोत भूराजस्व था।

मुस्लिमों से लिये जाने वाले भूराजस्व को उश्र कहते थे जो कि उत्पादन का 1/10 होता था एवं गैर मुस्लिमों से वसूल किये जाने वाले भूराजस्व को खिराज कहते थे जो उत्पादन का 1/5 से 1/3 होता था।

जकात मुस्लिमों से प्राप्त किया जाता था जो उनकी संपत्ति का 2.5% होता था। इसका उपयोग गरीब मुस्लिमों की सहायता हेतु किया जाता था।

जजिया गैर-मुस्लिमों से उनकी सुरक्षा के बदले वसूल किया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जाने वाला कर था।

खम्स युद्ध में लूट का भाग होता था जिसमें 20% हिस्सा राज्य का एवं 80% सैनिकों का होता था किन्तु अलाउद्दीन खिलजी ने राज्य हितों पर बल देते हुए इसे परिवर्तित कर दिया था।

मध्यस्थों की भूमिका:

सल्तनतकाल में भूराजस्व की व्यवस्था के अन्तर्गत खूत, मुकद्दम एवं चौधरी जैसे मध्यस्थ थे। ये किसानों से भूराजस्व वसूल कर राजकोष में जमा करवाते थे।

इन्हें भूराजस्व वसूलने के बदले राज्य से हक-ए-खोती एवं किसानों से किस्मत-ए-खोती के रूप में आय प्राप्त होती थी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

किन्तु अलाउद्दीन खिलजी ने राजस्व सुधार करते हुए मुक्ताओं का दमन किया।

अलाउद्दीन खिलजी ने मुक्ताओं के अधिकारों को समाप्त किया। उनकी शक्ति की माप करनी एवं उन्हें नष्ट करने के प्रयास किया गया

वस्तुतः अलाउद्दीन खिलजी धन के संकेन्द्रण को रोकना चाहता था ताकि विद्रोह एवं उपद्रव की स्थिति उत्पन्न न हो। इसलिये उसने मुक्ताओं को समाप्त किसानों के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित किये। उसकी राजस्व पद्धति को 'जवाबित' के नाम से ~~जाना~~ जाना जाता है। इसके माध्यम से वह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल रहा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation